International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(I), April- June, 2026, pp. 54-60

उत्तर–आधुनिकता और सांस्कृतिक संकटः बदलते समाज की चुनौतियाँ

डॉ. मीनाक्षी मीना*

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

*Corresponding Author: meenakshijnvu14@gmail.com

Citation: मीना, मीनाक्षी (2026). उत्तर–आधुनिकता और सांस्कृतिक संकटः बदलते समाज की चुनौतियाँ. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(I)), 54–60. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2(I).8860

सार

उत्तर आधुनिकता वर्तमान समाज की एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है। आधुनिकता के तर्क, विज्ञान और प्रगति के आदर्शों के विपरीत, उत्तर आधुनिकता विविधता, बहुलता, विखंडन और सापेक्षता पर बल देती है। इस परिवर्तन ने जहाँ एक ओर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति के नए आयाम खोले हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक अस्थिरता, सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और तकनीकी विकास ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, वहाँ सांस्कृतिक संरचनाएँ भी परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। पारंपरिक मान्यताएँ, रीति–रिवाज, नैतिक मूल्य और सामाजिक संस्थाएँ पहले जैसी स्थिर नहीं रह गई हैं। इसके स्थान पर एक ऐसी संस्कृति विकसित हो रही है जो उपभोग–केंद्रित और मीडिया–प्रभावित है। तकनीकी माध्यमों और सोशल मीडिया के विस्तार ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया है, साथ ही साथ सांस्कृतिक समानता और स्थानीय पहचान के विघटन की समस्या को भी उत्पन्न किया है। इस परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक संकट केवल सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, नैतिकता, सामूहिक चेतना और सामाजिक एकता को भी प्रभावित करता है। अतः यह अध्ययन उत्तर आधुनिकता के इस जटिल प्रभाव को समझने तथा बदलते समाज में उत्पन्न सांस्कृतिक चुनौतियों का विश्लेषण करने का एक प्रयास है।

शब्दकोशः *आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता, सांस्कृतिक मूल्य, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद।*

प्रस्तावना

उत्तर आधुनिकता एक ऐसी बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अवधारणा है, जो आधुनिकता के स्थापित सिद्धांतों, सार्वभौमिक सत्य, तर्कवाद विचारों पर प्रश्न उठाती है। यह मानती है कि कोई एक अंतिम सत्य नहीं होता, बल्कि सत्य बहुआयामी, सापेक्ष होता है। उत्तर आधुनिकता में विविधता, बहुलता, विखंडन और अनिश्चितता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। सरल शब्दों में, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो यह कहता है कि "सत्य और वास्तविकता को एक ही तरीके से नहीं समझा जा सकता, बल्कि यह व्यक्ति, समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।" ***ल्योटार्ड*** के अनुसार, उत्तर आधुनिकता "महान आख्यानों (Grand Narratives) के प्रति अविश्वास" है।[1] इसी संदर्भ में योगेंद्र सिंह का मत है कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

परंपरा और परिवर्तन के बीच एक जटिल संबंध स्थापित करती है, जहाँ विभिन्न सामाजिक संरचनाएँ नए अर्थ ग्रहण करती हैं" ।[2] इसका अर्थ यह है कि अब समाज किसी एक सार्वभौमिक विचारधारा या सिद्धांत को नहीं मानता। ***"जीन बौद्रिलार्ड*** ने उत्तर आधुनिक समाज में हाइपर–रियलिटी (Hyperreality) की अवधारणा दी। उनका मानना है कि आज मीडिया और तकनीक ने आभासी वास्तविकता को धारण कर लिया है"।[3] उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लोगों की आभासी पहचान वास्तविक पहचान से अधिक प्रभावशाली हो जाती है। ***"मिशेल फूको*** ने ज्ञान और सत्ता के बीच के संबंध को उजागर किया। उनके अनुसार, समाज में जो 'सत्य' माना जाता है, वह सत्ता संरचनाओं द्वारा नियंत्रित होता है। इसलिए, ज्ञान और सामाजिक व्यवस्था स्थिर नहीं रहती"।[4]

आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता में भिन्नताएँ

आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता में हम निम्न बिंदुओं के आधार पर विभिन्नताओं को दर्शाते हैं जैसे–

- **सत्य की अवधारणा** – आधुनिकता में सत्य को स्थिर, सार्वभौमिक और निरपेक्ष माना जाता है। यह मान्यता है कि तर्क, विज्ञान और अनुभव के माध्यम से वास्तविकता का सही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसके विपरीत, उत्तर आधुनिकता में सत्य सापेक्ष और बहुआयामी होता है। सत्य सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत संदर्भों पर निर्भर करता है और समय–समय पर बदलता रहता है। मीडिया, भाषा और सत्ता संरचनाएँ भी यह निर्धारित करती हैं कि समाज में कौन–सा सत्य मान्य होगा।
- **ज्ञान का स्रोत** – आधुनिकता में ज्ञान का स्रोत विज्ञान, तर्क और अनुभव माना जाता है, जो स्थिर और सार्वभौमिक सत्य की खोज करता है। उत्तर आधुनिकता में ज्ञान सापेक्ष और बहुआयामी है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत संदर्भों पर निर्भर करता है।
- **सामाजिक संरचना–** आधुनिकता में सामाजिक संरचना स्थिर, सुव्यवस्थित और नियमों पर आधारित होती है। यह समाज को वर्ग, श्रम–विभाजन और संस्थाओं के माध्यम से व्यवस्थित करती है। उत्तर आधुनिकता में सामाजिक संरचना अस्थिर, बहुआयामी और विखंडित हो गई है। इसमें पहचान, भूमिका और संबंध समय, संदर्भ और संस्कृति के अनुसार बदलते रहते हैं।
- **सांस्कृतिक दृष्टिकोण** – आधुनिकता में संस्कृति को स्थिर और परंपरागत मूल्यों के आधार पर देखा जाता है। इसमें नैतिकता, रीति–रिवाज और सामाजिक परंपराएँ महत्वपूर्ण होती हैं। उत्तर आधुनिकता में संस्कृति लचीली, बहुलतावादी और परिवर्तनशील हो गई है। वैश्वीकरण, मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के प्रभाव से सांस्कृतिक आदतें और पहचान निरंतर बदलती रहती हैं।
- **समाज में बदलाव का दृष्टिकोण–** आधुनिकता में समाज में बदलाव को निरंतर प्रगति और विकास के रूप में देखा जाता है। इसका मानना है कि समाज समय के साथ व्यवस्थित और सुधारात्मक रूप से आगे बढ़ता है। उत्तर आधुनिकता में बदलाव बहुआयामी, अस्थिर और निर्भर होता है। प्रत्येक व्यक्ति या समूह के अनुभव और सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियाँ बदलाव की दिशा तय करती हैं।

आधुनिकता और उत्तर–आधुनिकताः वर्तमान वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्विक समाज में आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता दोनों की प्रासंगिकता अलग–अलग रूपों में देखी जा सकती है। आधुनिकता समाज को तर्क, विज्ञान, और प्रगति के आधार पर व्यवस्थित और स्थिर बनाने में सहायक है। वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण और शिक्षा ने आधुनिक दृष्टिकोण को सामाजिक और आर्थिक विकास का आधार बनाया है। इसके माध्यम से सामाजिक संस्थाओं, नियमों और व्यवस्थित प्रक्रियाओं की मान्यता बनी रहती है"।[5] वहीं, उत्तर आधुनिकता वर्तमान समय में इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि यह वैश्वीकरण, डिजिटल मीडिया, उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक विविधता के बदलते प्रभाव को समझने में मदद करती है। आज का समाज बहुलतावादी और संदर्भ–निर्भर हो गया है, जहाँ सत्य, पहचान और संस्कृति स्थिर नहीं हैं। जिग्मंट बाउमन के अनुसार, आधुनिक समाज "Liquid Modernity की स्थिति में प्रवेश कर चुका है, जहाँ सामाजिक संरचनाएँ लगातार बदलती रहती हैं और कोई भी रूप स्थायी नहीं होता है"।[6] सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और

वैश्विक संस्कृति ने व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार को बदल दिया है। उत्तर आधुनिकता हमें यह समझने में सक्षम बनाती है कि समाज में परिवर्तन एक स्थिर लक्ष्य नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें बहुलता, अस्थिरता और संदर्भ–निर्भरता स्वाभाविक हैं"।[7] इस प्रकार, आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता दोनों वर्तमान वैश्विक संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। एक सामाजिक संगठन और विकास के लिए मार्गदर्शन देती है, जबकि दूसरी समाज की विविधता, अस्थिरता और बहुआयामी अनुभव को समझने में सहायता करती है।

सांस्कृतिक संकट की अवधारणा

सांस्कृतिक संकट से आशय है, जब समाज के मूल्य, परंपराएँ, मान्यताएँ और सांस्कृतिक पहचान कमजोर पड़ने लगती हैं या उनमें अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है। यह केवल परंपराओं के समाप्त होने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक गहरा सामाजिक परिवर्तन है, जिसमें व्यक्ति और समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से धीरे–धीरे दूर होने लगते हैं। सांस्कृतिक संकट तब उत्पन्न होता है जब समाज में पुराने मूल्य टूटने लगते हैं, लेकिन नए मूल्य पूरी तरह स्थापित नहीं हो पाते, जिससे एक प्रकार की असमंजस और अस्थिरता की स्थिति बन जाती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह स्थिति "normative breakdown" की प्रक्रिया को दर्शाती है, जहाँ सामाजिक नियंत्रण कमजोर हो जाता है और व्यक्ति अपनी पहचान को लेकर अनिश्चित हो जाता है"।[8] इसी संदर्भ में आधुनिक समाज में वैश्वीकरण और मीडिया संस्कृति के प्रभाव से सांस्कृतिक मूल्यों में तेजी से परिवर्तन देखा जा रहा है, जिससे परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव उत्पन्न होता है"।[9] इस प्रकार सांस्कृतिक संकट एक संक्रमणकालीन अवस्था है जिसमें पुरानी सांस्कृतिक संरचनाएँ कमजोर होती हैं और नई संरचनाएँ पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पातीं। सांस्कृतिक संकट के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं –

समाज में सांस्कृतिक संकट का एक प्रमुख कारण मूल्यों का क्षरण है। पहले समाज में नैतिकता, परिवार, सामूहिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को महत्वपूर्ण माना जाता था, लेकिन वर्तमान समय में व्यक्तिवाद और स्वार्थ परकता बढ़ने के कारण ये मूल्य कमजोर हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों में औपचारिकता और दूरी बढ़ती जा रही है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू सांस्कृतिक अस्मिता का संकट है। व्यक्ति यह तय नहीं कर पाता कि वह किस संस्कृति से जुड़ा हुआ है, विशेषकर तब जब वह पारंपरिक और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। यह स्थिति युवाओं में अधिक दिखाई देती है, जहाँ वे अपनी जड़ों और आधुनिक जीवन के बीच उलझे रहते हैं।

परिवार और सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन भी सांस्कृतिक संकट को बढ़ाता है। संयुक्त परिवारों का विघटन, पारंपरिक रीति–रिवाजों में कमी और सामुदायिक जीवन का कमजोर होना समाज में सांस्कृतिक निरंतरता को बाधित करता है। परिवार, जो संस्कृति के हस्तांतरण का प्रमुख माध्यम था, अब अपनी भूमिका में कमजोर होता जा रहा है।

भाषा और लोक संस्कृति का ह्रास भी सांस्कृतिक संकट का संकेत है। स्थानीय भाषाएँ, लोक कला, लोक परंपराएँ और रीति–रिवाज धीरे–धीरे समाप्त हो रहे हैं या केवल औपचारिकता तक सीमित रह गए हैं। इससे समाज की सांस्कृतिक विविधता और गहराई कम होती जा रही है।

मीडिया और तकनीकी प्रभाव ने भी सांस्कृतिक संकट को प्रभावित किया है। आधुनिक संचार माध्यमों के कारण एक समान संस्कृति का विकास हो रहा है, जिससे स्थानीय विशेषताएँ कम हो रही हैं। लोग अपने जीवन को मीडिया में दिखाए गए आदर्शों के अनुसार ढालने लगते हैं, जिससे वास्तविक और सांस्कृतिक जीवन के बीच अंतर बढ़ जाता है।

सांस्कृतिक संकट के परिणामस्वरूप समाज में सामाजिक विखंडन, नैतिक अस्थिरता, और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ बढ़ने लगती हैं। व्यक्ति अपने समाज और संस्कृति से जुड़ाव महसूस नहीं करता, जिससे सामाजिक एकता कमजोर होती है।

सांस्कृतिक संकट समाज के लिए एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि यह केवल परंपराओं का पतन नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना और मानवीय संबंधों के कमजोर होने का संकेत है। इस स्थिति में आवश्यक है कि समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझे और उसे बदलते समय के साथ संतुलित रूप में संरक्षित करने का प्रयास करे, ताकि सामाजिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहे।

परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व

परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व समाज में उस स्थिति को दर्शाता है, जहाँ पारंपरिक मूल्य, रीति–रिवाज और जीवनशैली आधुनिक विचारों, विज्ञान, तकनीक और नई जीवन पद्धतियों से टकराते हैं। परंपरा समाज की सांस्कृतिक निरंतरता, पहचान और स्थिरता का आधार होती है, जबकि आधुनिकता परिवर्तन, तर्कशीलता और प्रगति को बढ़ावा देती है। जब ये दोनों एक साथ अस्तित्व में रहते हैं, तो उनके बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। यह स्थिति "संरचनात्मक तनाव" को दर्शाती है, जहाँ पुरानी सामाजिक संरचनाएँ नए मूल्यों के साथ अनुकूलन नहीं कर पातीं"।[10] यह द्वंद्व विशेष रूप से उन समाजों में अधिक दिखाई देता है, जहाँ तीव्र सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। ***योगेंद्र सिंह*** के अनुसार भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सतत अंतःक्रिया उत्पन्न करती है, जिसमें दोनों एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं और नए सामाजिक रूपों का निर्माण होता है"।[11] परिवार व्यवस्था में जहाँ पहले संयुक्त परिवार और सामूहिक निर्णय महत्वपूर्ण थे, वहीं आधुनिकता व्यक्तिगत स्वतंत्रता और एकल परिवार को बढ़ावा देती है। इसी प्रकार, विवाह, शिक्षा, पहनावा और जीवनशैली में भी पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोणों के बीच टकराव देखने को मिलता है। वर्तमान समाज में परंपरा और आधुनिकता के बीच द्वंद्व अनेक क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह द्वंद्व जीवनशैली, सामाजिक संस्थाओं और सांस्कृतिक व्यवहार में निरंतर दिखाई देता है। कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

- **विवाह संस्था**– परंपरागत समाज में व्यवस्थित विवाह को प्राथमिकता दी जाती थी, जहाँ परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती थी। वहीं आधुनिक समाज में प्रेम विवाह अंतरजातीय और अंतरधार्मिक विवाह को अधिक स्वीकार्यता मिल रही है। इस कारण परिवार और व्यक्ति के निर्णयों के बीच टकराव उत्पन्न होता है।
- **परिवार व्यवस्था** –पहले संयुक्त परिवार सामाजिक जीवन का आधार थे, जहाँ सामूहिकता और पारस्परिक सहयोग महत्वपूर्ण था। आज के आधुनिक समाज में एकल परिवार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया जा रहा है, जिससे पारंपरिक पारिवारिक संबंध कमजोर हो रहे हैं।
- **भाषा और संचार**– परंपरागत रूप से स्थानीय भाषाएँ और बोलियाँ प्रमुख थीं। आज अंग्रेजी और डिजिटल भाषा (हिंग्लिश) का प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे स्थानीय भाषाओं का महत्व कम होता जा रहा है। यह सांस्कृतिक पहचान के लिए चुनौती बनता है।
- **महिलाओं की भूमिका**–परंपरागत समाज में महिलाओं की भूमिका घर तक सीमित मानी जाती थी। आधुनिकता के प्रभाव से महिलाएँ शिक्षा, रोजगार और नेतृत्व में आगे बढ़ रही हैं। इससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं और आधुनिक समानता के विचारों के बीच द्वंद्व उत्पन्न होता है।
- **धार्मिक आस्था बनाम वैज्ञानिक दृष्टिकोण**–परंपरा में धार्मिक आस्थाएँ और रीति–रिवाज प्रमुख थे, जबकि आधुनिकता वैज्ञानिक सोच और तर्क को बढ़ावा देती है। कई बार लोग धार्मिक परंपराओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन बनाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

उत्तर–आधुनिक समाज में जेन Z पीढ़ी (Generation Z) और सांस्कृतिक संकट

उत्तर आधुनिक समाज में जेन **Z** (Generation **Z**), लगभग 1995 के बाद जन्मी पीढ़ी, एक ऐसी सामाजिक इकाई है जो पूर्णतः डिजिटल, वैश्विक और तीव्र परिवर्तनशील वातावरण में विकसित हुई है। यह पीढ़ी इंटरनेट, सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वैश्वीकरण के प्रभाव में पली–बढ़ी है, जिसके कारण

इसकी सोच, पहचान और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पारंपरिक पीढ़ियों से काफी भिन्न हैं। आज की सामाजिक संरचना में पहचान निर्माण स्थिर न होकर निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया बन गई है, जिसे उत्तर आधुनिक संदर्भ में "Fluid Identity" कहा जाता है"।[12] इसी प्रकार, डिजिटल समाज में व्यक्ति पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं के बजाय नेटवर्क आधारित संबंधों के माध्यम से अपनी सामाजिक स्थिति और पहचान का निर्माण करता है, जिसे "Network Society कहा जाता है"।[13] जेन Z पीढ़ी सांस्कृतिक बहुलता, अस्थिर पहचान और डिजिटल संस्कृति के बीच विकसित हो रही है, जो आधुनिक सांस्कृतिक संकट और उत्तर आधुनिकता की प्रमुख विशेषताओं को दर्शाती है। इसलिए जेन Z पीढ़ी में सांस्कृतिक संकट स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव के कारण इनके सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध आभासी रूप लेने लगते हैं साथ ही, उपभोक्तावाद और ट्रेंड पर आधारित संस्कृति के प्रभाव में जेन Z अपनी पहचान को ब्रांड, फैशन और सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्त करती है। जिसके कारण संस्कृति एक वस्तु के रूप में बदलने लगती है और उसकी वास्तविक गहराई व मूल भाव धीरे–धीरे कम हो जाते हैं।

इस पीढ़ी में मूल्यों का परिवर्तन भी देखा जाता है, जहाँ पारंपरिक सामूहिकता की जगह व्यक्तिवाद, तात्कालिक संतुष्टि और आत्म–केंद्रितता को अधिक महत्व दिया जा रहा है, जिससे सामाजिक संबंधों की स्थिरता प्रभावित होती है। भाषा और अभिव्यक्ति के स्तर पर भी डिजिटल स्लैंग, हिंग्लिश और इमोजी के प्रयोग ने पारंपरिक भाषाई संरचनाओं को बदल दिया है। हालांकि, यह भी महत्वपूर्ण है कि जेन Z केवल सांस्कृतिक संकट का कारण नहीं है, बल्कि यह नई सांस्कृतिक संभावनाओं को भी जन्म देती है, जैसे विविधता, समानता और सामाजिक जागरूकता के प्रति संवेदनशीलता। अतः उत्तर आधुनिक समाज में जेन Z और सांस्कृतिक संकट का संबंध जटिल और बहुआयामी है, जहाँ एक ओर पारंपरिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है, वहीं दूसरी ओर नई सांस्कृतिक चेतना का निर्माण भी हो रहा है।

सांस्कृतिक संकट के परिणाम

सांस्कृतिक संकट का प्रभाव समाज के विभिन्न आयामोंकृसामाजिक, नैतिक, मानसिक और सांस्कृतिक पर गहराई से पड़ता है। जब समाज के मूल मूल्य, परंपराएँ और सांस्कृतिक संरचनाएँ कमजोर होने लगती हैं, तो उसके परिणाम व्यापक और दूरगामी होते हैं। इस स्थिति में सामाजिक एकता कमजोर हो जाती है और सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था में असंतुलन उत्पन्न होता है। यह स्थिति "एनोमी" की होती हैं।, जहाँ मानदंडों की अस्पष्टता व्यक्ति को अस्थिर और अनिश्चित बना देती है"।[14] सांस्कृतिक संकट का सबसे प्रमुख परिणाम सामाजिक विखंडन है। जब समाज में मूल्य और मान्यताएँ कमजोर हो जाती हैं, तो लोगों के बीच एकता और सामंजस्य कम होने लगता है। इससे सामाजिक संबंधों में दूरी बढ़ती है और समाज कई छोटे–छोटे समूहों में बंटने लगता है।

दूसरा महत्वपूर्ण परिणाम सांस्कृतिक अस्मिता का संकट है। व्यक्ति अपनी पहचान को लेकर असमंजस में पड़ जाता है कि वह किस संस्कृति, परंपरा या मूल्य प्रणाली से जुड़ा हुआ है। यह स्थिति विशेष रूप से युवाओं में अधिक दिखाई देती है, जिससे उनमें असुरक्षा और भ्रम की भावना उत्पन्न होती है।

तीसरा, नैतिक मूल्यों का पतन भी सांस्कृतिक संकट का एक प्रमुख परिणाम है। जब पारंपरिक नैतिकता और सामाजिक आदर्श कमजोर पड़ते हैं, तो सही और गलत के बीच की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं। इससे समाज में अपराध, भ्रष्टाचार और अनैतिक व्यवहार बढ़ने की संभावना रहती है।

इसके अलावा, पारिवारिक और सामाजिक संस्थाओं का कमजोर होना भी एक गंभीर परिणाम है। परिवार, जो संस्कृति के संरक्षण और हस्तांतरण का मुख्य माध्यम था, अब अपनी भूमिका में कमजोर हो रहा है। इससे पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक संवाद और मूल्य हस्तांतरण में कमी आती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम मानसिक तनाव और अस्थिरता है। जब व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट जाता है और स्थिर पहचान नहीं बना पाता, तो उसमें अकेलापन, असुरक्षा और मानसिक दबाव बढ़ने लगता

है। सांस्कृतिक संकट के कारण भाषा और लोक संस्कृति का ह्रास भी होता है। स्थानीय भाषाएँ, लोक कला, परंपराएँ और रीति–रिवाज धीरे–धीरे समाप्त होने लगते हैं, जिससे समाज की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि प्रभावित होती है।

समाधान व सुझाव

आधुनिक समाज में सांस्कृतिक संकट का समाधान एक संतुलित और समन्वित दृष्टिकोण अपनाने से ही संभव हो सकता है। मानव समाज को परंपरागत मूल्यों और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए ताकि, सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहे और सामाजिक विकास भी हो सके। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति, इतिहास, लोक परंपराएँ और नैतिक मूल्यों को शामिल करना आवश्यक है, जिससे आने वाली नई पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ी रहे। परिवार की भूमिका को सशक्त बनाना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि परिवार, संस्कृति के संरक्षण और हस्तांतरण का मुख्य माध्यम है। स्थानीय भाषाओं, लोक कला और परंपराओं को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक विविधता को सुरक्षित रखा जाना चाहिए । सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का सकारात्मक उपयोग सांस्कृतिक जागरूकता फैलाने और परंपराओं के प्रचार–प्रसार के लिए किया जाना चाहिए। इसके अलावा, समाज में नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, सहिष्णुता और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि सामाजिक संतुलन बना रहे। वैश्वीकरण के प्रभाव के बावजूद स्थानीय संस्कृति और पहचान को संरक्षित रखना चाहिए और युवाओं को सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए, जिससे वे अपनी संस्कृति के प्रति जिम्मेदार और जागरूक बन सकें। इस प्रकार, सांस्कृतिक संकट का समाधान केवल संरक्षण में नहीं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय और संतुलन स्थापित करने में निहित है, जिससे समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए विकास की दिशा में अग्रसर हो सके।

निष्कर्ष

आधुनिक समाज में उत्तर आधुनिकता ने ज्ञान, सत्य, पहचान और सांस्कृतिक मान्यताओं के परंपरागत ढाँचों को चुनौती दी है। इससे समाज में सांस्कृतिक अस्थिरता और पहचान का संकट उत्पन्न हुआ है। हालांकि, उत्तर आधुनिकता ने समाज में बहुलता, विविधता और रचनात्मकता को भी बढ़ावा दिया है। वर्तमान संदर्भ में, सांस्कृतिक संकट केवल परंपराओं के क्षरण का परिणाम नहीं है, बल्कि यह समाज के विकास और बदलाव की प्रक्रिया का हिस्सा भी है। इस स्थिति में आवश्यक है कि समाज परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए, स्थानीय संस्कृति और भाषाओं को संरक्षित करे, और युवाओं को सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक बनाए। उत्तर आधुनिक समाज में सांस्कृतिक संकट चुनौतियों के साथ–साथ नई संभावनाओं का अवसर भी प्रस्तुत करता है, और इसका समाधान संतुलन, जागरूकता और समन्वित प्रयासों में निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ल्योटार्ड, जे.एफ. (1984). द पोस्टमॉडर्न कंडीशनः ए रिपोर्ट ऑन नॉलेज. यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस. पेज– **xxiv**.
2. सिंह, वाई. (2012). मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन. रावत पब्लिकेशन्स, पेज नंबर–15.
3. इग्नू. (2017). सोसाइकोलॉजी के सिद्धांत. इग्नू. पेज 130–135.
4. फौकॉल्ट, एम. (1977). डिसिप्लिन एंड पनिशः द बर्थ ऑफ द प्रिजन. पैंथियन बुक्स. पेज 27–28.
5. नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग. (2015). भारतीय समाज. NCERT. पेज 45–48.
6. बाउमन, जेड. (2000). लिक्विड मॉडर्निटी. पॉलिटी प्रेस. पेज 1–5.
7. इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी. (2017). समाजशास्त्र के सिद्धांत. इग्नू. पेज 120–130.
8. दुर्खीम, ई. (1897). सुसाइडः ए स्टडी इन सोशियोलॉजी. फ्री प्रेस. पेज 210–215.
9. गिडेंस, ए. (1991). मॉडर्निटी और सेल्फ–आइडेंटिटी. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पेज 5–10.

10. पार्सन्स, टी. (1951). द सोशल सिस्टम. फ्री प्रेस. पेज 45–50.
11. सिंह, वाई. (2012). इंडियन ट्रेडिशन का मॉडर्नाइजेशन. रावत पब्लिकेशन्स. पेज 20–25.
12. बाउमन, जेड. (2000). लिक्विड मॉडर्निटी. पॉलिटी प्रेस. पेज 1–10.
13. कास्टेल्स, एम. (2010). द राइज ऑफ द नेटवर्क सोसाइटी. विली–ब्लैकवेल. पेज 1–5.
14. दुर्खीम, ई. (1897). सुसाइडः ए स्टडी इन सोशियोलॉजी. फ्री प्रेस. पृष्ठ 210–215.

❑❑❑